पकड़ा गया

pakaṛā gayā

Caught in the Act

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 16]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of
OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-154418/;
bradholbrook71 https://pixabay.com/images/id-1080252/; geralt
https://pixabay.com/images/id-391658/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

बा-इख़्तियार कलाम	2
एक चाल	2
बचने का रास्ता ही नहीं	4
वह पहला पत्थर मारे	5
पकड़ा गया	5
क्या मुझे सच्ची माफ़ी मिली है?	6
माफ़ी से तबदीली	7
इंजील और शरीअत में फ़रक़	8
मेरा क्या जवाब है?	9
इंजील, यूहन्ना 8:1-11	9

एक दिन ईसा मसीह पौ फटते ही बैतुल-मुक़द्दस में आ पहुँचा।

► **बैतुल-मुक़द्दस क्या था?**

बैतुल-मुक़द्दस यरूशलम में वह जगह थी जहाँ यहूदी अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाते थे। कहीं और चढ़ाने की इजाज़त नहीं थी। वहाँ वह क़ुरबानियाँ चढ़ाने पूरी दुनिया से आते थे। उस ज़माने में यह शानदार इमारत दुनिया के अजूबों में गिनी जाती थी। आज उस जगह पर मसजिद अल-अक़्सा की सुनहरी गुंबद धूप में चमकती-दमकती है।

► **अल-मसीह का वहाँ आने का क्या मक़सद था? क्या वह क़ुरबानियाँ चढ़ाना चाहता था? या मोजिज़े दिखाने आया था?**

नहीं। वह बैठकर लोगों को तालीम देने लगा। उस ज़माने में उस्ताद बैठता था जबकि सुननेवाले खड़े रहते थे।

► **वह लोगों को तालीम क्यों देने लगा?**

लोग खोई हुई भेड़ों जैसे थे जो भूले-भटके फिर रहे थे। यह देखकर उसे उन पर तरस आता था। वह जो सच्चा चरवाहा था वह उन्हें जन्नत का रास्ता दिखाना चाहता था। मामूल के मुताबिक़ ज्योंही

उसने अपना मुँह खोला लोग दौड़कर उसके गिर्द जमा हुए और बड़े मज़े से सुनने लगे।

बा-इख़्तियार कलाम

ईसा मसीह स्कूल का आम टीचर नहीं था। उसकी बातें सुन सुनकर उनकी आँखें फटी की फटी रह जाती थीं। वह रटी-रटाई बातें नहीं बताता था। वह बड़े इख़्तियार के साथ बात करता था, क्योंकि उसके फ़रमान सीधे ख़ुदा के फ़रमान थे।

आम उस्ताद तालाब का बासी पानी निकालकर अपने चेलों में बाँट देता है। ईसा मसीह फ़रक़ था। वह कलाम का आसमानी बीज बोकर आसमानी चश्मे के उबलते पानी से उसकी सिंचाई करता था। उसके कलाम से रूहानी ज़िंदगी उगकर फलती-फूलती है। यह कलाम सीधा दिल में जा बसता है जहाँ वह सुननेवाले की पूरी ज़िंदगी उलट-पलट कर डालता है।

एक चाल

अचानक खलबली मच गई। शरीअत के कुछ आलिम एक औरत घसीटकर उनके बीच में आ धमके। इजाज़त माँगे बग़ैर उन्होंने औरत को उस्ताद को पेश करके कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है।”

बेचारी औरत! वह थरथराती हुई उनके बीच में खड़ी रही। वह जानती थी कि ज़िना की सज़ा मौत है।

► **लेकिन रुको, रुको! एक ही इनसान से ज़िना कब से होती है?**
वह आदमी कहाँ था जिसने ज़िना की थी? क्या सिर्फ़ औरत को पकड़ा गया था? शरीअत के मुताबिक़ मर्द और औरत दोनों ही सज़ाए-मौत लायक़ हैं (तौरेत, इस्तिसना 22:22)।

► **और यह आलिम, औरत को यहाँ क्यों लाए? क्या ऐसे मामलों के लिए यहूदी अदालतें नहीं थीं?**
ज़रूर। दाल में कुछ काला था। हक़ीक़त यह है : औरत का गुनाह सिर्फ़ बहाना था। असली मक़सद एक और था। यह कि उस्ताद को पकड़ा जाए।

► **वह उसे किस तरह फँसाना चाहते थे?**
उन्होंने कहा, "मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?"

► **संगसार करने का क्या तरीक़े-कार था?**
मुजरिम को ज़मीन पर पटख़कर पत्थरों से मार डाला जाता था। लाज़िम था कि गुनाह के गवाह पहले पत्थर मारें (तौरेत, इस्तिसना 17:7)।

बचने का रास्ता ही नहीं

यह आलिम बहुत चालाक थे। वह तो जानते थे कि ईसा मसीह निहायत रहमदिल है। वह पहले से नाराज़ थे कि वह गुनाहगारों से मिला करता है। हालाँकि उनके गुनाह उसे बहुत तकलीफ़ देते थे। ख़ुद तो वह पूरी तरह पाक था, इसलिए हर गुनाह उसे काँटे की तरह चुभता था। लेकिन उसे इस दुनिया में भेजा गया था कि गुनाहगारों को नजात दे। जिस तरह लिखा है,

> अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इस-लिए कि वह उसे नजात दे। (यूहन्ना 3:17)

आलिमों का अंदाज़ा यह था : उस्ताद इस गुनाहगार औरत को माफ़ करेगा। तब हम उसे मुलज़िम ठहरा सकेंगे। हम कह सकेंगे कि यह कुफ़र बक रहा है। यह कहता है कि शरीअत की बातें नहीं माननी हैं। एक और बात भी है। वह जानते थे कि अगर उस्ताद फ़रमाए कि औरत को सज़ा दो तो भी फँस जाएगा। रोमियों का मुल्क पर क़ब्ज़ा था, और वही सज़ाए-मौत देते थे। अगर उस्ताद औरत को सज़ाए-मौत लायक़ ठहराए तो रोमी उसे पकड़ेंगे।

वह पहला पत्थर मारे

अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने क्या किया। जिसे इलाही इख़्तियार होता है वह हर मौक़े पर बात नहीं करता। कभी कभी उसे ख़ामोश भी रहना पड़ता है। इस मौक़े पर ईसा मसीह ख़ामोश रहा। ख़ामोश रहना भी एक क़िस्म का जवाब होता है।

► **साथ साथ उसने क्या किया?**

जो उसने किया वह कुछ अजीब-सा लग रहा था। वह झुककर अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा। हम नहीं जानते कि उसने क्या लिखा। लेकिन एक बात साफ़ है : वह वही जवाब देने को तैयार नहीं था जो आलिम उससे माँग रहे थे।

आलिम चौंक उठे। इससे काम नहीं बनेगा। आख़िर उसे कोई जवाब तो देना ही है! वह डटकर सवाल का जवाब माँगते रहे।

तब ईसा मसीह खड़ा होकर बोला, "तुममें से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।"

वह फिर झुककर ज़मीन पर लिखने लगा।

पकड़ा गया

कितना अजीब मंज़र! यह आलिम लोगों को पकड़ने में बहुत माहिर थे। पहले उन्होंने औरत को पकड़ लिया था, और अब वह ईसा मसीह को भी पकड़ने पर तुले हुए थे। लेकिन यहाँ इसके उलट हुआ : उन्हीं को पकड़ा गया।

पहले सबकी आँखें औरत और उसके गुनाह पर लगी थीं। अब अचानक हर एक को उसके अपने गुनाह महसूस हुए।

पकड़नेवालों को ख़ुद पकड़ा गया।

आलिमों की सोच हम सबकी सोच है। हम सब पकड़नेवाले होते हैं। किसी को पकड़ा जाए चाहे उसकी ग़लती मामूली-सी क्यों न हो तो हम एकदम बड़ा मज़ा उठाते हैं। सबके सब उसे मोटी मोटी गालियाँ देते हैं। मगर ईसा मसीह के हुज़ूर एक बुनियादी बात ज़ाहिर हो जाती है—हम सबको ख़ुदा से पकड़ा गया है। गुनाह में हम सब बराबर होते हैं। हम सबके सब इस लायक़ नहीं कि ख़ुदा के हुज़ूर आएँ।

क्या मुझे सच्ची माफ़ी मिली है?

अब धीरे धीरे आलिम एक एक करके वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब। औरत को उन्होंने वहीं छोड़ दिया।

आलिमों की चाल जवाब दे गई थी।

अब जो उस्ताद को पकड़ना चाहते थे उन्हीं को पकड़ा गया। अपने गुनाहों में पकड़े गए। इस कलाम की तेज़ रौशनी में वह अपने गुनाहों को महसूस करते हैं। लेकिन इससे पहले कि उनके गुनाह खुले-आम हो जाएँ वह भाग जाते हैं।

► **और औरत? उसका क्या हुआ?**

ईसा मसीह ने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा नहीं लगाया?”

औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावंद।”

उस्ताद ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”

देखो, आलिम और औरत गुनाह में बराबर थे। यह भी गुनाहगार थी और वह भी। लेकिन एक फ़रक़ था।

► **वह क्या?**

आलिम अपने गुनाहों में उलझे रहे जबकि औरत को माफ़ी मिली। आलिम अपने गुनाहों को तसलीम नहीं कर सकते थे इसलिए वह माफ़ी मिले बग़ैर भाग गए। औरत को माफ़ी मिली और उसका दिल हलका हुआ।

माफ़ी से तबदीली

► **क्या आपके ख़याल में औरत इसके बाद दुबारा ज़िना करने में जुट गई?**

कलाम हमें इसके बारे में कुछ नहीं बताता। लेकिन मुझे यक़ीन है कि उस्ताद के कलाम से वह तबदील हुई और सही रास्ते पर आ गई।

► **क्यों?**

वह उसे ख़ुदावंद कहती है। ईसा मसीह उसका ख़ुदावंद बन गया, उसका मालिक। अब से उसकी ज़िंदगी उसके हाथ में थी। उसकी हुकूमत के तहत थी। इस हुकूमत के तहत वह पहली बार हक़ीक़ी

मानों में आज़ाद थी। इस आज़ादी की ख़ुशी के मारे उसे अपनी पुरानी ज़िंदगी से घिन आई और वह सही राह पर आई।

जो ईसा मसीह से तबदील हो जाता है उसे अपनी पुरानी ज़िंदगी से घिन आती है और वह राहे-मुस्तक़ीम पर आ जाता है।

इंजील और शरीअत में फ़रक़

इससे इंजील और शरीअत में फ़रक़ भी पता चलता है।

ख़ुदा ने शरीअत नाज़िल की ताकि इनसान को ढाँचा मिले, एक क़ानून जिससे एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात महफ़ूज़ रहें। शरीअत का एक ज़रूरी हिस्सा सज़ा भी है। शरीअत ही हमें बताती है कि ऐ इनसान तुझसे गुनाह हुआ है। और शरीअत ही हमें सज़ा देती है जब हमसे गुनाह होता है।

शरीअत इनसान को पकड़कर सज़ा देती है जबकि ईसा मसीह उसे माफ़ी देकर गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद कर देता है।

यही इंजील की ख़ुशख़बरी है।

मसीह नहीं चाहता कि हम गुनाह के ग़ुलाम रहें। वह हमें इस ग़ुलामी से आज़ाद करना चाहता है। जब हमें यह आज़ादी हासिल हो तो हमें न सिर्फ़ माफ़ी मिलती है बल्कि हम गुनाह करना ही नहीं चाहते। हम ईसा मसीह के दामन को थामे हुए दिल की गहराइयों से सही रास्ते पर रहना चाहते हैं।

मेरा क्या जवाब है?

► **अब सवाल यह है : क्या हम आलिमों की तरह ईसा मसीह के हुज़ूर से भाग जाएँगे? या औरत की तरह अपने गुनाहों को मानकर माफ़ी पाएँगे? क्या हम गुनाह की ज़ंजीरों में जकड़े रहेंगे या इंजील की आज़ादी के साथ ज़िंदगी गुज़ारेंगे?**

इंजील, यूहन्ना 8:1-11

ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया। अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैतुल-मुक़द्दस में आया। वहाँ सब लोग उसके गिर्द जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है। मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?”

इस सवाल से वह उसे फँसाना चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा।

जब वह उससे जवाब का तक़ाज़ा करते रहे तो वह खड़ा होकर उनसे मुख़ातिब हुआ, “तुममें से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।” फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन पर लिखने लगा।

यह जवाब सुनकर इलज़ाम लगानेवाले यके-बाद-दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब।

आख़िरकार ईसा और दरमियान में खड़ी वह औरत अकेले रह गए। फिर उसने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा नहीं लगाया?”

औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावंद।”

ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”